# परमेश्वर के अनुग्रह की महिमा

फ्रैंकलिन द्वारा नोट्स

अनुग्रह को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है : अनुग्रह परमेश्वर का वह अपार धन है जो मसीह के बलिदान के द्वारा प्राप्त हुआ।

- मुफ्त में दिया गया, जिसे अर्जित नहीं किया गया, जिसके हम योग्य नहीं, आशीषें और वरदान
- अनुग्रह - हमें उस दान का दिया जाना जिसके हम योग्य नहीं हैं
- दया - हमें वह न देना जिसके हम सच में योग्य हैं।
- अनुग्रह और दया प्रेम में से उमड़कर बहते हैं।

## I. परिचय

इफिसियों 1:3-6 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक **आशीष दी है**। 4जैसा **उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया,** कि हम **उसके निकट** प्रेम में **पवित्र और निर्दोष हों**। (उसके लहू ने यह सम्भव किया) 5 और **अपनी इच्छा** के **भले अभिप्राय** के अनुसार हमें **अपने लिये पहले से ठहराया** कि यीशु मसीह के द्वारा "**हम उसके लेपालक पुत्र हों**" (सही अनुवाद "लेपालक पुत्र" नहीं बल्कि "पुत्र" होगा) 6 कि **उसके** उस **अनुग्रह** की **महिमा** की **स्तुति** हो, **जिसे उसने हमें** उस प्रिय में **सेंतमेंत दिया** यीशु मसीह।

- उसके अनुग्रह ने **हमें** सब प्रकार की आत्मिक **आशीष दी है**
- उसके अनुग्रह ने **हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया**
- उसके अनुग्रह ने **हमें परमेश्वर के सामने** पवित्र और निर्दोष बनाया।
- उसके अनुग्रह **ने** पहले से ठहराया **कि हम** यीशु मसीह के पुत्र **और पुत्रियाँ** हों

यूनानी क्रिया का काल दर्शाता है कि यह सब सनातन काल में पहले ही हो चुका था। यह सब उसकी योजना थी और है, और क्योंकि वह सर्व प्रभुता सम्पन्न है, इसलिए यह निश्चय होगा।

हम जो हैं वह हैं, शत प्रतिशत केवल

**उसके अनुग्रह** के द्वारा

और इसका हमारी क्षमता, प्रयत्नों या कार्यों से कुछ लेना देना नहीं है।

कि **उसके** उस **अनुग्रह** की **महिमा** की **स्तुति** हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में **सेंतमेंत** दिया।

अब मैं चाहता हूँ कि हम यह जानें : अनुग्रह = सामर्थ्य

2 कुरिन्थियों 12:9-10 पर उसने मुझ से कहा, "मेरा **अनुग्रह** तेरे लिये **बहुत** है; क्योंकि मेरी **सामर्थ्य निर्बलता** में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा कि **मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे**।

- यह आयत स्पष्ट कर देता है कि **अनुग्रह = सामर्थ्य**

- और यह कि मैं या तो **अपनी सामर्थ्य** को चुन सकता हूँ **या परमेश्वर के अनुग्रह** को मांग कर **उसकी सामर्थ्य** को।

2 कुरिन्थियों 9:8 परमेश्वर **सब प्रकार का अनुग्रह** (सामर्थ्य) तुम्हें **बहुतायत** से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय (सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो) तुम्हारे पास रहे; और हर एक भले **काम** के लिये तुम्हारे पास **बहुत कुछ** हो।

- **अनुग्रह** = आपके लिए ऐसी **सामर्थ्य** जिससे आपके पास हर भले काम के लिए और हर सेवकाई के लिए, जिसकी बुलाहट उसने आपको दी है, **पर्याप्त** हो और **बहुतायत** से हो।

प्रेम **ने सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर को** कार्य **अर्थात** अनुग्रह **करने को सशक्त और प्रेरित किया ताकि वह हमें बचा सके! अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है (इफिसियों** 2:5)

यूहन्ना 3:16 परमेश्वर ने ऐसा **प्रेम रखा**... कि उसने दे दिया... अपना एकलौता पुत्र, जिसने हमसे ऐसा **प्रेम** रखा कि उसने **हमें बचाने के लिए** क्रूस की मृत्यु को भी सह लिया।

हमारे उद्धार की पूर्ण प्राप्ति के लिए सामर्थ्य, उसका प्रेम और उसका अनुग्रह था।

इफिसियों 3:16-21 पौलुस की प्रार्थना : कि वह **अपनी महिमा के धन** के अनुसार तुम्हें यह **दान दे** कि तुम **उसके आत्मा** से अपने भीतरी मनुष्यत्व में (आप में) **सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ**; 17 और

**विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे** (परमेश्वर प्रेम है) कि **तुम प्रेम** में (जो राज्य की हर वस्तु का आधार है) **जड़ पकड़कर** और **नेव डाल** कर, 18 सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति **समझने** की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है, 19 और **मसीह के** उस **प्रेम को जान सको** जो ज्ञान से परे है (क्यों?) कि तुम **परमेश्वर की सारी भरपूरी** तक **परिपूर्ण हो जाओ**।

- परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाने (1 यूहन्ना 4:8) का अर्थ, जो की **प्रेम** है, **सामर्थ्य** से परिपूर्ण होना है।

20 अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से **कहीं अधिक** काम कर सकता है, **उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है**,

21 कलीसिया में और **मसीह यीशु** में **उसकी महिमा** पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

इफिसियों 2:1-10 उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे 2 जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। 3 इनमें (इन "के" नहीं) हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान **स्वभाव** ही से (हमारे व्यवहार का तरीका) क्रोध की सन्तान थे। 4 परन्तु परमेश्वर ने जो **दया का धनी** है, अपने **उस बड़े प्रेम** के **कारण** (दया प्रेम में से बहती है) जिस से **उसने हम से प्रेम किया**, 5 जब हम अपराधों के कारण **मरे** हुए थे (एक मृत मनुष्य अपनी सहायता नहीं कर सकता) तो **हमें** मसीह के साथ **जिलाया**, **अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है** (यूनानी काल : ऐसी क्रिया जो पहले ही हो चुकी है लेकिन उसके परिणाम निरंतर अब भी जारी हैं), 6 और **मसीह यीशु** में **उसके साथ उठाया**, और **स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया** (परमेश्वर की

दृष्टि में यह वाचा के लहू के कारण समाप्त, हो चुका, पूर्ण हुआ कार्य है। और आप कभी अपना आसन नहीं खोएंगे) 7 कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने **अनुग्रह** का **असीम धन** दिखाए। 8 क्योंकि **विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है** (यूनानी काल : ऐसी क्रिया जो पहले ही हो चुकी है लेकिन उसके परिणाम निरंतर अब भी जारी हैं); और **यह** (विश्वास) **तुम्हारी ओर से नहीं**, वरन् **परमेश्वर का दान** है, 9 और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

- वाक्य में : 8 क्योंकि **विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है**; और **"यह" तुम्हारी ओर से नहीं**, वरन् **परमेश्वर का दान** है,

- कुछ लोगों का कहना है : और **"यह" तुम्हारी ओर से नहीं**, वरन् **परमेश्वर का दान** है का संदर्भ **तुम्हारा उद्धार हुआ है**।

- लेकिन मूल भाषा में वाक्य इस प्रकार पढ़ा नहीं जाता। वाक्य है : **क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है**; और **"यह"** विश्वास का अनुसरण करता है और **तुम्हारी ओर से नहीं** का अभिप्राय विश्वास से है।

- जैसा पहले ही बताया जा चुका है कि **अनुग्रह** (मुफ्त दान) ही से **तुम्हारा उद्धार हुआ है**, इसलिए यह अनुग्रह **तुम्हारी ओर से नहीं** की व्याख्या नहीं करता। बल्कि वाक्य इस प्रकार है : **विश्वास के द्वारा ... तुम्हारा उद्धार हुआ है** और **"यह"** (विश्वास) **तुम्हारी ओर से नहीं**, वरन् **परमेश्वर का दान** है। 9 और न **कर्मों** के कारण, **ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे**।

- और फिर ऐसे भी हैं जो अपने विश्वास की ढींगें मारते हैं। याकूब 2:18 कोई कह सकता है, "तुझे विश्वास है और मैं कर्म करता हूँ।" तू अपना विश्वास मुझे **कर्म** बिना तो दिखा; और मैं अपना **विश्वास अपने कर्मों के द्वारा** तुझे दिखाऊँगा

- और **विश्वास के द्वारा ... तुम्हारा उद्धार हुआ है** और **"यह" तुम्हारी ओर से नहीं**, वरन् **परमेश्वर का दान** है। 9 और न **कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे**।

## II. बहुत से आयत यह बताते हैं कि विश्वास परमेश्वर की ओर से वरदान है।

इब्रानियों 12:2 और **विश्वास** के **कर्ता** और **सिद्ध करनेवाले यीशु** की ओर ताकते रहें

- **कर्ता** - दो यूनानी शब्द : आरम्भ करना, अगुवाई करना या लाना। **यीशु कर्ता** है जिससे विश्वास आता है, आरम्भ होता है और उत्पन्न होता है।

- **सिद्ध करनेवाले** - इसके यूनानी शब्द का अर्थ पूरा करना, सिद्ध करना। लूका 22:32 मैं ने तेरे लिये विनती की कि **तेरा विश्वास जाता न रहे**; निरंतर और बने रहनेवाला विश्वास परमेश्वर की ओर से और परमेश्वर के द्वारा सिद्ध होता है।

गलातियों 3:23 पर **विश्वास के आने से पहले** व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और **उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था**, हम उसी के बन्धन (आश्वासन) में रहे।

- हम तक विश्वास आया। यह हमारे भीतर या हम में से उत्पन्न नहीं हुआ।

  यह इस बात को बतलाता है कि हम **विश्वास के आने से पहले** से **उसकी संतान** हैं [उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें **चुन लिया** इफिसियों 1:4] और जब तक हमने विश्वास नहीं किया, व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी।

24 इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिये हमारी **शिक्षक** हुई है कि **हम विश्वास से धर्मी ठहरें**। 25 परन्तु जब **विश्वास आ चुका**, तो **हम** अब शिक्षक के अधीन न रहे। **संतान के रूप में**।

1 पतरस 1: 1-3 भी देखें पतरस की ओर से ... उन **परदेशियों** (अन्य देश के, नागरिक नहीं) के नाम जो उन जगहों में रहते हैं ...परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार **चुने गए हैं**, ... जिसने अपनी **बड़ी दया** से **हमें नया जन्म दिया**। 21 जो **उसके द्वारा** उस परमेश्वर पर **विश्वास करते हो**। 23 **क्योंकि तुम ने** नाशवान् (पृथ्वी का, मानवीय) नहीं पर **अविनाशी** (स्वर्गीय) **बीज** से, **परमेश्वर के** जीवते और सदा ठहरनेवाले **वचन** के द्वारा **नया जन्म पाया है**। 25 प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है।
मत्ती 16:15-17 परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? **16** शमौन पतरस ने उत्तर दिया, तू जीवते परमेश्वर का पुत्र, मसीह है। 17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि **मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने** जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर **प्रगट की है**।

- पतरस ने इसे इसलिए लिखा क्योंकि वह जानता था कि वह जो विश्वास करता है वह प्रकाशन के द्वारा है:

2 पतरस 1:1 शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, **उन लोगों के नाम जिन्होंने** हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे समान बहुमूल्य **विश्वास प्राप्त किया है**।

रोमियों 12:3-4 **तुम में से हर एक से कहता हूँ कि.... परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है।** वह विश्वासियों से बात कर रहा है। देखें आयत 1 भाइयो

फिलिप्पियों 1:29 क्योंकि मसीह के कारण **तुम पर यह अनुग्रह हुआ** कि **न केवल उस पर विश्वास करो** पर उसके लिये दु:ख भी उठाओ

प्रेरितों के काम 3:16 उसी के नाम में–अर्थात् **उस विश्वास द्वारा जो यीशु के नाम पर है**–इस मनुष्य को जिसे तुम जानते और देखते भी हो, बल मिला है। **उसी विश्वास ने जो *उसके द्वारा है**, इसे सब के सामने पूर्ण चंगाई दी है।

*यूनानी शब्द (di') डिया (डी-आह'); प्राथमिक पूर्वसर्ग है जो क्रिया के माध्यम को दर्शाता है।

विश्वास हमारे पास यीशु के माध्यम से आता है। विश्वास उससे उत्पन्न होता है और हमें दिया जाता है।

1 पतरस 1:21 तुम ***उसके द्वारा परमेश्वर में विश्वासी हो** ...**इस लिए** तुम्हारा **विश्वास** और **आशा** परमेश्वर पर है। (*माध्यम से या द्वारा – क्रिया का माध्यम)

यूहन्ना 3:27 जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न **दिया जाए**, तब तक वह **कुछ नहीं पा सकता**।

1 कुरिन्थियों 4:7 और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं **पाया?**

इफिसियों 2:8 क्योंकि **विश्वास** के द्वारा **अनुग्रह** (परमेश्वर का मुफ्त दान) ही से (या के माध्यम से) तुम्हारा **उद्धार हुआ है**; और **यह तुम्हारी ओर से नहीं**, वरन् परमेश्वर का **दान** है

- यह इस बात को स्पष्ट कर देता है कि **उद्धार हमारी ओर से नहीं है**। इसलिए **विश्वास** भी **"हमारी ओर से" नहीं** हो सकता क्योंकि उद्धार विश्वास के द्वारा या उसके माध्यम से आता है। अन्यथा उद्धार हमारे ऊपर ही निर्भर करता।

- और इस बात को स्पष्ट करने के लिए पवित्र आत्मा ने इस वाक्यांश को जोड़ा "और **यह** तुम्हारी ओर से नहीं" जो स्पष्ट रूप से **उस संज्ञा की ओर पूर्व संकेत करता है**, "**विश्वास**", जो हमारी ओर **से नहीं** बल्कि "**परमेश्वर का दान**" है।"

रोमियों 4:16-17 **इसी कारण** प्रतिज्ञा **विश्वास** पर आधारित है कि **अनुग्रह की रीति पर** हो, (यदि विश्वास हमारे भीतर उत्पन्न होता, फिर यह अनुग्रह, जो मुफ्त दान है, उसके अनुसार **नहीं** है) कि वह उसके सब वंशजों के लिये (अक्षरशः बीज। हम चुने हुए वंश से हैं) दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है वरन् उनके लिये भी जो अब्राहम **के** समान विश्वासवाले हैं; वही तो हम सब का पिता है।

प्रेरितों के काम 16:14-15 लुदिया नामक . . एक भक्त स्त्री, सुन रही थी। **प्रभु ने उसका मन खोला** कि वह पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।

2 थिस्सलुनीकियों 3:2 और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें, **क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं**।

2 थिस्सलुनीकियों 2:13 . . . परमेश्वर ने आरम्भ ही से **तुम्हें चुन लिया** है कि आत्मा के द्वारा (दो बातें) (1) पवित्र बन कर **और** (2) सत्य पर **विश्वास** करके **उद्धार** पाओ।

- आत्मा द्वारा पवित्र किया जाना। शब्द "और" पवित्र बनना और विश्वास करने को जोड़ता है, और इसका अर्थ यह है कि **विश्वास भी आत्मा से उत्पन्न है और उसका मूल मनुष्य में से हैं**।

- योना 2:9 उद्धार यहोवा ही से होता है!

याकूब 2:5 हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं **चुना** कि **विश्वास में धनी** और उस राज्य के अधिकारी हों

1 कुरिन्थियों 1:30 परन्तु उ**सी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो**, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा

रोमियों 12:3 क्योंकि मैं उस **अनुग्रह** के कारण **जो मुझ को मिला है** . . . . जैसा **परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है**

- परमेश्वर ने हर एक को जिसे "उसने जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया" और जिसका नाम "**जीवन की पुस्तक**" में लिखा था -> **विश्वास परिमाण के अनुसार दिया है**।

- लेकिन **विश्वास** के उस परिणाम के अनुसार विश्वास करना, यह हमारी जिम्मेवारी है कि उस **विश्वास को बढ़ाएं**। **कैसे ? ?** सुनने के द्वारा

रोमियों 10:16-17 परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया : यशायाह कहता है, "हे प्रभु, **किसने हमारे समाचार पर विश्वास किया है**?" 17 अत: **विश्वास सुनने से** और सुनना मसीह के वचन से होता है।

- जब आप वचन को पढ़ते, प्रार्थना करते, और पूरे दिन . . . जितना अधिक आप सुनेंगे . . . आपका विश्वास बढ़ेगा।

उदाहरण के लिए:

प्रेरितों के काम 3:16 और उसी **यीशु** के नाम ने, उस **विश्वास** के द्वारा जो **उसके नाम पर** है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है। उसी **विश्वास ने जो उसके द्वारा** (डिया) **है**, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।

- (डिया) कारण, या द्वारा। क्रिया का माध्यम

गलातियों 3:5 जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या **सुसमाचार पर विश्वास** से ऐसा करता है?

## और सुनना परमेश्वर के द्वारा दिया जाता है:

यशायाह 55:11 उसी प्रकार से **मेरा वचन** भी होगा जो **मेरे मुख** से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो **मेरी इच्छा है** उसे वह **पूरा करेगा**, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह **सफल करेगा**।

व्यवस्थाविवरण 29:4 परन्तु **यहोवा ने** आज तक तुम को **न** तो समझने की बुद्धि, और न देखने की आँखें, और **न सुनने के कान दिए हैं**।

मरकुस 4:9-12 तब उसने कहा, **"जिसके पास सुनने के लिये कान हों, वह सुन ले।"** (यह संकेत देता है कि सब कान सुनते नहीं हैं) 10 जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे इन दृष्टान्तों के विषय में पूछा। 11 उसने उनसे कहा, **"तुम को** तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ **दी गई है**, परन्तु **बाहरवालों के लिये** सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। 12 इसलिये कि "वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और **सुनते हुए सुनें भी और न समझें**; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएँ।" (यशायाह 6:9 आगे)

लूका 8:8 कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगकर सौ गुणा फल लाया।" यह कहकर उसने ऊँचे शब्द से कहा, "**जिसके सुनने के कान हों वह सुन** ले।" (यह संकेत देता है कि सब कान सुनते नहीं हैं)

यूहन्ना 8:43-47 तुम मेरी बात **क्यों** नहीं समझते? इसलिये कि **तुम मेरा वचन सुन नहीं सकते**। 44 तुम अपने पिता शैतान **से** हो, . . . 45 परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिये तुम मेरा विश्वास नहीं करते। 47 **जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है**; और **तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।**"

यूहन्ना 10:26-28 परन्तु तुम इसलिये विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; **मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं;** 28 **और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।**

- स्पष्ट संकेत है कि ऐसी भेड़ें भी हैं जो दूसरों की हैं...

रोमियों 5:5 क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा **परमेश्वर का प्रेम** हमारे मन में डाला गया है।

- परमेश्वर ने हमारे मन में अपना प्रेम डाला है

गलातियों 5:6 मसीह यीशु में . . . **विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है।**

- हमारे मन में जो प्रेम डाला गया है -> विश्वास उसी का परिणाम है, या वह उसी प्रेम से आता है।
- तो **विश्वास हमारी ओर से नहीं, न ही हमारे में से उत्पन्न है**। पर इसका आरम्भ परमेश्वर द्वारा अपना **प्रेम** हमारे हृदयों में उन्डेले जाने से होता है और फिर उस

प्रेम में से **विश्वास** उत्पन्न होता है और बढ़ता है। जितना अधिक हम उन सब के विषय में जानते हैं जो उस ने हमारे लिए किया है, **उतना अधिक हमारा प्रेम बढ़ता है और फिर हमारा विश्वास बढ़ता है**। लेकिन यह सब प्रभु परमेश्वर, हमारे पिता द्वारा अपना प्रेम हमारे मन में डाले जाने से आरम्भ होता है।

## सब अनुग्रह के कारण

**अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है** और **उद्धार यहोवा ही से होता है**!

योना 2:9

## III. हम परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं

**धर्मी** ठहराए जाने का अर्थ है: **धर्मी बनाना** / मुक्त करना / स्वतंत्र करना / पाप दोष से मुक्त और "दोष रहित" होने की घोषणा। निर्दोष। निष्कलंक।

धार्मिकता (संज्ञा) और धर्मी ठहराया जाना (क्रिया) एक ही यूनानी मूल शब्द से हैं।

रोमियों 3:22-27 **परमेश्वर की** वह **धार्मिकता** जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से **सब विश्वास करनेवालों के लिये है**। क्योंकि कुछ भेद नहीं; 23 इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, 24 परन्तु **उसके अनुग्रह से** उस **छुटकारे** के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत **धर्मी ठहराए जाते हैं**। 25 उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा **प्रायश्चित** (संतुष्ट करनेवाला बलिदान) ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी

होता है, कि जो पाप पहले किए गए और जिन पर परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता के कारण **ध्यान नहीं दिया**। उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता **प्रगट** करे। 26 वरन् इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही **धर्मी** ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी **धर्मी ठहरानेवाला** हो। 27 **तो घमण्ड करना कहाँ रहा? उसकी तो जगह ही नहीं।**

रोमियों 4:5-8 परन्तु जो **काम नहीं करता** वरन् **भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले** पर **विश्वास करता है**, उसका विश्वास उसके लिये **धार्मिकता** गिना जाता है। 6 जिसे परमेश्वर **बिना कर्मों के धर्मी** ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है : 7 "धन्य हैं वे जिनके **अधर्म क्षमा हुए**, और जिनके **पाप ढाँपे गए** (लहू के द्वारा)। 8 धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर **पापी** न ठहराए।"

## IV. हम परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा छुड़ाए गए हैं

छुड़ाए जाने का अर्थ है "जो मूल रूप से आपका है उसे वापस मोल लेकर प्राप्त कर लेना।"

हम परमेश्वर के हैं - उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया (इफिसियों 1:4) परन्तु आदम के कारण हमारा जन्म पाप और मृत्यु में हुआ – जो शैतान का राज्य है – एक दास के रूप में जो दुष्ट के अधिकार में और वश में हैं।

यीशु शैतान के अधिकार क्षेत्र के अंधकार में चला और उसने हमारी **स्वतंत्रता** का **मूल्य चुकाया**, हमारे **छुटकारे** के लिए उसने मूल्य चुकाया।

1 पतरस 1:18-20 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है उस से तुम्हारा **छुटकारा** चाँदी-सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। 19 पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् **मसीह के बहुमूल्य लहू** के द्वारा हुआ।

- मूल्य **का निर्धारण . . .** खरीदने के लिए चुकाए गए दाम **से होता है।**
- तो, **आप कितने मूल्यवान हैं** ? लोग कितने मूल्यवान हैं ?

इब्रानियों 9:12 **अपने ही लहू** के द्वारा, एक ही बार पवित्रस्थान में प्रवेश किया और **अनन्त छुटकारा** प्राप्त किया। 15 इसी कारण वह **नई वाचा** का मध्यस्थ है, **ताकि** उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, **बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें**।

अत: **अब** जो मसीह यीशु में हैं, उन पर **दण्ड की आज्ञा** (कोई न्यायिक दंड नहीं) **नहीं**। [क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।] क्योंकि **जीवन** की आत्मा की व्यवस्था ने **मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया**। रोमियों 8:1-2

प्रभु यीशु ने न सिर्फ हमें मोल लिया बल्कि: उसी ने हमें अन्धकार के वश से **छुड़ाकर** अपने प्रिय पुत्र के **राज्य में प्रवेश कराया**, (14) जिस में हमें **छुटकारा** अर्थात् पापों की क्षमा **प्राप्त होती है**। कुलुस्सियों 1:13

---

## V. अनुग्रह के द्वारा उसके लहू ने हमें क्षमा कर दिया है

इब्रानियों 9:22 **बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं।**

इफिसियों 1: 7 **हम को** उसमें **उसके लहू** के द्वारा **छुटकारा**, अर्थात् अपराधों की **क्षमा**, **उसके उस अनुग्रह के धन** के अनुसार मिला है

इब्रानियों 9:26 वह . . . अपने ही बलिदान के द्वारा **पाप को दूर कर दे**।

इब्रानियों 10:17-19 **मैं** उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को **फिर कभी स्मरण न करूँगा** (अनुग्रह)। और **जब** इनकी **क्षमा हो गई है** . . . इसलिये हे भाइयो, जब **हमें यीशु के लहू** के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का **हियाव हो गया है**

1 यूहन्ना 3:5 तुम जानते हो कि वह इसलिये प्रगट हुआ कि **पापों को हर ले जाए**; और **उसके स्वभाव में पाप नहीं**। हम "मसीह के स्वभाव में" हैं (रोमियों 8:1; 1 कुरिन्थियों 1:30; 2 कुरिन्थियों 5:17)

प्रकाशितवाक्य 1:5 वह **हम से प्रेम रखता है**, और उसने **अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है**

भजन 103:10-12 उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार **नहीं किया** (अनुग्रह), और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार **हम को बदला दिया** है (अनुग्रह)। (11) जैसे आकाश

पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है, वैसे ही **उसकी करुणा** उसके डरवैयों के ऊपर **प्रबल है**। (12) **उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है**, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही **दूर कर दिया है**।

- ये सब इस कारण है क्योंकि हमारे प्रति उसके प्रेम में से अनुग्रह बह निकलता है।

कुलुस्सियों 2:13-15 **उसने तुम्हें** भी, जो **अपने अपराधों** और अपने शरीर की खतनारहित दशा **में मुर्दा थे**, (उसके अनुग्रह के द्वारा) उसके साथ **जिलाया**, (कैसे?) और **हमारे सब अपराधों को क्षमा किया**, (उसने ऐसा कैसे किया?) (14) और **विधियों का वह लेख** जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था **मिटा डाला**, और उसे **क्रूस पर कीलों से जड़कर** सामने से हटा दिया है। (इसका परिणाम क्या हुआ?) (15) और उसने **प्रधानताओं** और **अधिकारों** को **ऊपर से उतारकर**

- शैतान का कवच उसके झूठ और छल हैं। "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" 2 कुरिन्थियों 11:14
- उसका हथियार पाप है

उनका **खुल्लमखुल्ला** तमाशा बनाया और **क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार** की ध्वनि - सुनाई।

खुल्लमखुल्ला तमाशा:

एक रोमी सेनापति, अपने शत्रुओं को पराजित करने के बाद, उनके कवच, उनके हथियारों, उनके वस्त्रों को उतार फेंकता था और फिर उस पराजित सेना को रोम की सड़कों पर ले जाता था। यह खुल्लमखुला तमाशा था और उसकी विजय यात्रा।

और अब उसने हमें यह विजय दे दी है :

1 कुरिन्थियों 15:57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **हमें जयवन्त करता है**।

- ये सब इस कारण है क्योंकि हमारे प्रति उसके प्रेम में से अनुग्रह बह निकलता है।

---

## VI. परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उसके लहू से हमारा मेल-मिलाप हुआ है

**मेल-मिलाप का अर्थ है** : **सही सम्बन्ध** में पुनः स्थापित होना, मित्रता को बहाल करना, शांति बहाल करना। उस सम्बन्ध को पुनः स्थापित करना जो परमेश्वर का आदम के साथ था।

हमारे पाप ने हमें अपने पिता से अलग कर दिया है। यशायाह 59:2 परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से **अलग कर दिया** है, और **तुम्हारे पापों** के कारण **उसका मुख तुम से ऐसा छिपा है** कि वह नहीं सुनता।

2 कुरिन्थियों 5:17-21 परमेश्वर ने मसीह के द्वारा अपने साथ **हमारा मेलमिलाप** कर लिया, और **मेलमिलाप की सेवा हमें सौंप दी है**।

- पौलुस यहाँ कुरिन्थ के विश्वासियों को लिख रहा है। वह कहता है कि हर नया जन्म पाया हुआ विश्वास **एक सेवक है।** हमारी सेवा क्या है?

(19) अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ **संसार का मेलमिलाप** कर लिया, और **उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया,**

- 1 यूहन्ना 2:2 और वही **हमारे पापों** का प्रायश्चित (संतुष्टि) है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् **सारे जगत** के पापों का भी।

- यूहन्ना 1: 29 देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो **जगत का पाप उठा ले जाता है।**

- यह शुभ सन्देश है जो हम हर एक को बताते हैं, क्योंकि ...

उस ने **मेलमिलाप का वचन हमें** सौंप दिया है। (20) इसलिये, हम मसीह के **राजदूत** हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि **परमेश्वर के साथ मेलमिलाप** कर लो।

- राजदूत होने के नाते हम परमेश्वर की ओर से ऐसे बात करते हैं मानो परमेश्वर **हमारे द्वारा** विनती कर रहा है।

- हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि **परमेश्वर के साथ मेलमिलाप** कर लो जो परमेश्वर ने आपके लिए किया है उसे ग्रहण करो। विश्वास करो ! !

- **हमारा मेल-मिलाप** हो गया है -> प्रभु परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में पुनर्स्थापित हुए हैं, क्योंकि ...

(21) जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये **पाप ठहराया कि** हम उसमें होकर **परमेश्वर की धार्मिकता** बन जाएँ।

- यीशु के लहू और परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा यह किया जा चुका है। आपको केवल विश्वास करना और इसे ग्रहण करना है।

कुलुस्सियों 1:22 **उसने** अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा **तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि** तुम्हें अपने सम्मुख **पवित्र** और **निष्कलंक**, और **निर्दोष** बनाकर उपस्थित करे।

1 कुरिन्थियों 1: 8 वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।

फिलिप्पियों 1:6 मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, **वही उसे** यीशु मसीह के दिन तक **पूरा करेगा।** जो परमेश्वर ने आरम्भ किया है उसे वह पूरा करेगा। वह एक को भी नहीं खोएगा।

रोमियों 5:10 क्योंकि **बैरी होने की दशा** में उसके **पुत्र की मृत्यु के द्वारा** हमारा **मेल** परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर **मेल हो जाने पर** उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?

न केवल उसने सबसे मेल-मिलाप किया बल्कि उसने सब को मोल भी ले लिया

2 पतरस 2:1 जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे, उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे, और उस स्वामी का जिसने **उन्हें मोल लिया** है **इन्कार करेंगे**, और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे।

उसने **सबसे मेल-मिलाप** किया और उसने **सबको मोल ले लिया** ... तो क्या इसका यह अर्थ है कि सब स्वर्ग जा रहे हैं? नहीं ! क्योंकि ....

**क्योंकि एक पाप है जिसका परिणाम मृत्यु है :**

यीशु ने पवित्र आत्मा के विषय में बात करते हुए कहा : यूहन्ना 16:8-10 वह आकर संसार को **पाप** और धार्मिकता और **न्याय** के विषय में **निरुत्तर** करेगा। (9) **पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।**

- यह वह पाप है जिसका परिणाम मृत्यु है -> अनंत मृत्यु

यह **इस प्रश्न** का उत्तर देता है : "यदि परमेश्वर प्रेम करनेवाला परमेश्वर है, तो वह कैसे किसी को नरक में भेज सकता है?"

**उत्तर** : वह नहीं भेजता। जब लोग उसके अनुग्रह के मुफ्त दान को अस्वीकार कर देते हैं जिसका इतना बड़ा मूल्य चुकाया गया, तो वे स्वयं अपने को नरक में धकेलते हैं।

**हमें चाहिए** कि हम मसीह की ओर से निवेदन करें कि **परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो।**

2 कुरिन्थियों 5:20

हमें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे **अनुग्रह** और **धर्मरूपी वरदान** बहुतायत से **पाएं।** रोमियों 5:17

उसके राजदूत, उसके याजक होने के नाते यह हमारी जिम्मेवारी है कि इस बात का सुसमाचार हर एक को सुनाएं कि यीशु के लहू ने उनके लिए क्या किया है।

अनंत जीवन हर उस व्यक्ति के लिए है जो यीशु मसीह पर **विश्वास करता** और उसे **ग्रहण करता** है जिसने कहा : "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ" (यूहन्ना 14:6)।

दूसरे शब्दों में : यीशु के लहू को **ग्रहण** किया जा सकता है **या अस्वीकार** किया जा सकता है।

---

## VII. यीशु मसीह का लहू हमें शुद्ध करता या हमें पवित्र बनाता है

(एक ही मूल यूनानी शब्द। शुध्द करना क्रिया है और पवित्र संज्ञा है)

इब्रानियों 13: 12 इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को **अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने** के लिये फाटक के बाहर दु:ख उठाया।

**NHB** में इस प्रकार लिखा है : मसीह येशु ने भी, नगर के बाहर यातनाएँ सहीं कि वह **अपने रक्त से लोगों को शुद्ध करें।** इब्रानियों 13:12 **NHB**

इब्रानियों 10:10 उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के **एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने** के द्वारा पवित्र किए गए हैं।

प्रेरितों के काम 26:18 . . . कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो **मुझ पर विश्वास करने** से **पवित्र किए** गए हैं, मीरास **पाएँ**।'

शब्द पवित्र या शुद्ध किए गए के दो अर्थ हैं :

1. एक विश्वासी केवल **यीशु** के **लहू** से ही **पवित्र** (साफ़, शुद्ध, धर्मी) किया जाता है क्योंकि जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर **परमेश्वर की धार्मिकता** बन जाएँ। (2 कुरिन्थियों 5:21)

2. यह सच्चाई कि हम पवित्र या शुद्ध किए गए हैं **हमें** अन्य सब लोगों से **अलग करती** है। **आम** या **जन साधारण** से अलग किए गए, और विशेष इस्तेमाल के लिए **अर्पित** और **सौभाग्य प्राप्त**।

आपको **पवित्र किया** गया और अन्य सब लोगों से **अलग किया** गया – इसलिए **हम इसी प्रकार जीवन बिताएं :**

1 पतरस 1:14-16 **आज्ञाकारी** बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी **अभिलाषाओं** के **सदृश** न बनो। (15) पर **जैसा** तुम्हारा बुलानेवाला **पवित्र है**, वैसे ही **तुम** भी अपने **सारे चालचलन** में **पवित्र बनो।** (16) क्योंकि लिखा है, **"पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"**

आपको विशेष इस्तेमाल के लिए अलग किया गया, अर्पित किया गया है और यह सौभाग्य मिला है :

1 पतरस 2:9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और **राज-पदधारी याजकों का समाज**, और **पवित्र** लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो (क्यों), **इसलिये कि** जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण **प्रगट करो।** आपके जीवन के द्वारा आपके शब्दों की पुष्टि होनी चाहिए।

निर्गमन 11:4-8 फिर मूसा ने कहा, "यहोवा इस प्रकार कहता है : आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूँगा। (5) तब मिस्र ... के सब पहिलौठे मर जाएँगे। ...

(7) पर इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भौंकेगा; जिससे तुम **जान लो** कि मिस्रियों और इस्राएलियों में मैं **यहोवा अन्तर करता** हूँ। **उसके लोगों और संसार के लोगों के बीच।** परमेश्वर की संतान होने के नाते आप अन्य सभी से विशिष्ट हैं।

यह मेमने का **लहू** था जिससे यह **अंतर आया**, कि वे अन्य सब लोगों से **अलग हुए**, और उन्होंने **विशेष बर्ताव** और **सौभाग्यों** को पाया।

---

## VIII. अनुग्रह के द्वारा उसका लहू हमें शुद्ध करता है :

यीशु के लहू का एक और महत्वपूर्ण प्रावधान हमारे **प्रति दिन के पापों** से हमारा **निरंतर शुद्धिकरण** है जो इन परिणामों को देता है – यीशु और एक दूसरे के साथ **संगति/ सहभागिता/ घनिष्ठता**

पढ़ें : 1 यूहन्ना 1:5-10 पद 7 **:** पर **यदि** जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी **ज्योति में चलें**, तो एक दूसरे से **सहभागिता** रखते हैं, और उसके पुत्र **यीशु का लहू** हमें **सब पापों से शुद्ध करता है**।

**कृपया ध्यान दें :** यीशु के लहू का यह गुण शुद्ध करने के विषय में है, जिसका परिणाम यीशु और एक दूसरे के साथ संगति में होता है।

यह **शर्त के साथ** है :

(ज्योति में) **हम क्या करते हैं - हम कैसे जीते हैं - हम कैसे चलते हैं।** यह हमारी गवाही का महत्वपूर्ण भाग है। जो हम कहते हैं केवल वही नहीं बल्कि हम कैसे दिन प्रति दिन रहते हैं।

---

## IX. यीशु का लहू निरंतर हमारी मध्यस्थता करता है

इब्रानियों 12:22-24 पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास ... (24) और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और **छिड़काव के उस लहू** के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से **उत्तम बातें कहता** है।

कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या की। फिर वह उसकी जवाबदेही से मुकर गया, लेकिन परमेश्वर ने कहा : "तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लहू भूमि से **मेरी ओर चिल्लाकर** मेरी **दोहाई** दे रहा है! उत्पत्ति 4:10

हाबिल का लहू प्रतिशोध के लिए पुकार रहा था। यीशु का लहू कुछ अच्छा कहता है – वह परमेश्वर की उपस्थिति में **निरंतर दया** और **क्षमा** की **दोहाई** देता है – हमारे लिए मध्यस्थता करता है।

परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा – यीशु का लहू – हमें धर्मी ठहराने, हमारी धार्मिकता, हमारे छुड़ाए जाने, क्षमा, मेल-मिलाप, पवित्र किए जाने, और शुद्ध करने के लिए सदा रहनेवाला, अनंत दान है।

## यह सब

परमेश्वर के अनुग्रह

और

परमेश्वर के मेमने के लहू

**यीशु मसीह**

के कारण है

## X. परमेश्वर की इच्छा पूरी होगी, क्योंकि वह प्रभुता सम्पन्न है।

भजन 33:8-12 सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय मानें! क्योंकि **जब उसने कहा, तब हो गया**; जब **उसने आज्ञा दी**, तब वास्तव में **वैसा ही हो गया।** यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है। **यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएँ** पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी। क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है, और वह समाज जिसे **उसने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया** हो!

यशायाह 14:24-25 सेनाओं के यहोवा ने यह **शपथ खाई** है, **"नि:सन्देह जैसा मैं ने ठान लिया है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी।**

यशायाह 43:13 मैं ही परमेश्वर हूँ और भविष्य में भी **मैं ही हूँ; मेरे हाथ से कोई छुड़ा न सकेगा; जब मैं काम करना चाहूँ तब कौन मुझे रोक सकेगा।**

यशायाह 55:11 उसी प्रकार से **मेरा वचन** भी होगा जो **मेरे मुख** से निकलता है; **वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा।**

लूका 10: 22 मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है; और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है केवल पिता, और पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता केवल पुत्र के और **वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।**

यूहन्ना 6: 39 **मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है** कि **जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ,** परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ।

यूहन्ना 18: 9 **वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था** : "जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमें से मैं ने एक को भी न खोया।"

रोमियों 9: 11 और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था; इसलिये कि **परमेश्वर की मनसा** जो **उसके चुन लेने** के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं परन्तु बुलानेवाले के कारण है, **बनी रहे**

इफिसियों 1: 11 उसी में जिसमें हम भी **उसी की मनसा** से जो **अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए** जाकर मीरास बने

कुलुस्सियों 1:26-28 अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके **उन पवित्र लोगों पर प्रगट** हुआ है। (27) **जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना** चाहा कि उन्हें **ज्ञात** हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।

याकूब 1:18 उसने **अपनी ही इच्छा से** हमें सत्य के वचन के द्वारा **उत्पन्न किया**, ताकि हम उसकी सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों।

1 पतरस 4:6 क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिये सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर आत्मा में वे **परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें।**

यहूदा 24 अब **जो** तुम्हें ठोकर खाने से **बचा सकता** है, और **अपनी महिमा की भरपूरी के सामने ... निर्दोष करके खड़ा कर सकता है** ...